अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 414–422
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.039

गुरुकुल से ग्लोबल तक: भारतीय ज्ञान प्रणाली के आलोक में शिक्षक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा का सतत् विकास

कु. नित्या गुरुंग[1] और प्रो. सुषमा पाण्डेय[2]

प्राप्तिः 25 मार्च 2026 / स्वीकृतः 29 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा हमेशा से मात्र ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रही है, अपितु यह मानव निर्माण और समाज के प्रति व्यक्ति में सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना को जगाए रखने में कार्यरत है। भारतीय गुरुकुल प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा के संबंध में शिक्षा को एक आध्यात्मिक साधना का रूप दिया है | जहां धर्म, सत्य, अहिंसा और मानव कल्याण जैसे मूल्यों को जीवन का आधार मानकर बालक को शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाता है। वर्तमान काल में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने शिक्षा के स्वरूप को बदल कर रख दिया है, किंतु मूल्य आधारित भारतीय शिक्षा परंपरा की आवश्यकता आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं| प्रस्तुत अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि भारतीय शिक्षक शिक्षण संस्थान किस प्रकार से भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों को आधुनिक शिक्षण प्रक्रिया में समाहित कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन परंपरा और आधुनिकता के मध्य सेतु निर्माण की संभावनाओं को तलाशता है ताकि, शिक्षा मात्र कौशल तक सीमित न रहकर बौद्धिक, संवेगिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का भी संवाहक बने। अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि शिक्षक शिक्षा संस्थान मात्र ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि यह सामाजिक आदर्श और मूल्य निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य तत्व जैसे- योग, ध्यान, भारतीय साहित्य, तर्क और संवाद परंपरा इत्यादि कौशल प्रशिक्षण में शामिल होकर शिक्षक शिक्षा को और अधिक मूल्य उन्मुख बनाते हैं। अध्ययन में उन समस्याओं एवं चुनौतियां पर भी प्रकाश डाला गया है जो आधुनिक विकास और वैश्वीकरण के क्रम में मूल्य क्षरण का कारण बनती है। भारतीय ज्ञान

[1]शोधार्थी (UGC JRF), [2]आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रणाली के आलोक में शिक्षक शिक्षा का अविरल विकास न केवल भारत के लिए बल्कि संपूर्ण विश्व के शिक्षा विमर्श के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं लाभदाई है| यह अध्ययन इस बात पर भी बल देता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल कौशल विकास नहीं अपितु अध्यात्म, नैतिकता, बौद्धिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्वों का समन्वय होना चाहिए।

मुख्य बिंदु: भारतीय ज्ञान प्रणाली, मूल्य-आधारित शिक्षा, शिक्षक शिक्षा संस्थान, गुरुकुल परंपरा, आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षा दर्शन, नैतिकता

प्रस्तवना

वर्तमान परिपेक्ष में शिक्षा मात्र ज्ञान अर्जन एवं कौशल का साधन नहीं रही अपितु यह मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं विकास का प्रमुख साधन है। समकालीन समाज में नैतिक संकट, सामाजिक असंतुलन, आध्यात्मिक क्षरण और सांस्कृतिक विघटन जैसी समस्याएं बनी हुई है तकनीकी और प्रगति में जहां वैश्वीकरण के माध्यम से जीवन को सुविधाजनक बनाया है वही मानवीय संवेदना और नैतिकता के चरण की प्रवृत्ति भी पड़ी है ऐसी स्थिति में मूल्य आधारित शिक्षा अत्यंत थी आवश्यक होती है जो की शिक्षा को मात्र रोजगार उन्मुख नहीं अपितु जीवन के लिए उन्मुख बनाएं। भारतीय ज्ञान प्रणाली का दर्शन इस संदर्भ में अपनी विशेष भूमिका बनाए हुए हैं भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं अपितु धर्म सत्य अहिंसा और सेवा जैसे मूल्य का विकास है। भारतीय धारा की प्रमुख पुस्तक जैसे उपनिषद गीता व योग सूत्रों में भी शिक्षा को आत्म और समाज कल्याण का साधन माना है अतः इस दृष्टि से शिक्षा का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति को ज्ञान मंत्र विद्वान बनाना नहीं है बल्कि उसे एक जिम्मेदार नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत नागरिक के रूप में तैयार करना है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह है कि वर्तमान शिक्षक प्रणाली में शिक्षक शिक्षा संस्थान मूल्य आधारित शिक्षा को किस प्रकार संस्थागत रूप से दे सकते हैं और भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों को आधुनिक परिवेश में किस प्रकार पाठ्यचर्या व प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जा सकता है। यह अध्ययन परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक सेतु निर्माण की संभावना को रेखांकित करता है जिससे शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित न होकर अपितु बौद्धिक आध्यात्मिक नैतिक व सामाजिक उत्तरदायित्व का भी संवाहक बने|

भारतीय परंपरा में मूल्य

शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली का स्वरूप प्राचीन काल से ही समग्र और बहुआयामी रहा है, जिसमें केवल ज्ञानार्जन ही नहीं, बल्कि मूल्य और नैतिकता का भी समुचित विकास होता था। शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के आदर्शों और संस्कारों को आत्मसात करने की प्रक्रिया माना जाता था। गुरुकुल व्यवस्था इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहते हुए शास्त्रों का अध्ययन करते थे और साथ ही गुरु के आचरण, जीवनशैली, और नैतिक मूल्यों से अनुशासन, संयम, करुणा, और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे

गुणों को आत्मसात करते थे। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को न केवल विद्वान बनाना था, बल्कि समाजोपयोगी और उत्तरदायी नागरिक के रूप में भी विकसित करना था। नालंदा, तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों ने इस समग्र शिक्षा परंपरा को और व्यापक रूप दिया। इन संस्थानों में विभिन्न विषयों का अध्ययन होता था, परंतु ज्ञानार्जन के साथ-साथ मूल्यबोध और नैतिक शिक्षा को भी उतना ही महत्त्व दिया जाता था। विद्यार्थियों को सहयोग, सत्यनिष्ठा, करुणा, और सामाजिक सेवा जैसे आदर्शों का अभ्यास कराया जाता था, जिससे वे न केवल विद्वत्ता में, बल्कि नैतिकता और सामाजिक चेतना में भी अग्रणी बन सकें। शिक्षा को आत्मविकास और लोककल्याण का माध्यम माना जाता था, जिससे विद्वान समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए जीवन यापन करते थे। इतिहास और पुरालेखों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय परंपरा में शिक्षा का मूल स्वरूप व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित था। ज्ञान और मूल्य का यह समन्वय शिक्षा को केवल पेशेवर दक्षता तक सीमित नहीं रखता था, बल्कि उसे जीवन के उच्चतर उद्देश्यों से जोड़ता था। इस दृष्टि से शिक्षा का अंतिम लक्ष्य आत्मोन्नति, सामाजिक भलाई, और मानवता की सेवा था। आज के आधुनिक युग में भी भारतीय परंपरा में निहित यह मूल्य शिक्षा का दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली इस विरासत को आत्मसात कर सके, तो वह केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, और चरित्र निर्माण से युक्त नागरिक तैयार कर सकती है। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है—ज्ञान और मूल्य का समन्वित विकास, जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए लाभकारी हो।

आधुनिक शिक्षक शिक्षा संस्थान

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा व्यवस्था का पुनर्गठन एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा। औपनिवेशिक काल की सीमाओं से बाहर निकलते हुए राष्ट्र ने शिक्षक शिक्षा को संस्थागत रूप देने की दिशा में ठोस कदम उठाए। प्रारंभिक दशकों में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य केवल शिक्षण कौशल विकसित करना नहीं था, बल्कि शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया से जोड़ना भी था। इस दौर में शिक्षा को सामाजिक न्याय, समान अवसर और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम माना गया। समय के साथ शिक्षक शिक्षा संस्थानों ने अपने स्वरूप में विविधता और विस्तार प्राप्त किया। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा विभागों की स्थापना हुई, जहाँ शिक्षक प्रशिक्षण को व्यवस्थित पाठ्यचर्या और अनुसंधान से जोड़ा गया। इस संस्थागत विकास ने शिक्षक को केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं, बल्कि मूल्य-निर्माता और सामाजिक परिवर्तन के वाहक के रूप में परिभाषित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस परंपरा को नए आयाम प्रदान करती है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगारोन्मुखी दक्षता नहीं, बल्कि नैतिकता, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को इस दृष्टि से पुनर्संरचित करने की आवश्यकता

बताई गई है, ताकि वे भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों को आधुनिक पाठ्यचर्या में समाहित कर सकें। योग, ध्यान, भारतीय साहित्य और संवाद परंपरा जैसे तत्वों को प्रशिक्षण का हिस्सा बनाकर शिक्षा को अधिक समग्र और मूल्य-उन्मुख बनाने पर बल दिया गया है। हाल के वर्षों में शिक्षक शिक्षा में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिनका प्रभाव शिक्षा के गुणवत्ता और शिक्षक के सामाजिक भूमिका पर गहरा पड़ा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षक शिक्षा संस्थानों को पुनर्गठित कर उनके पाठ्यक्रमों में समग्र विकास, मूल्य-आधारित शिक्षा, और तकनीकी कौशल के साथ-साथ नैतिकता और करुणा को भी शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे शिक्षकों की पेशेवर योग्यता और समस्या-समाधान कौशल में सुधार हुआ है। यह परिवर्तन शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रूप में स्थापित करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKC) और मूल्य-आधारित शिक्षा

आधुनिक शिक्षक शिक्षा संस्थान अब केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKC) और मूल्य-आधारित शिक्षा को समाहित करते हुए नैतिकता, करुणा, और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रशिक्षण का अभिन्न हिस्सा बना रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत योग, ध्यान, भारतीय दर्शन, और संवाद परंपरा जैसे तत्वों को शिक्षक प्रशिक्षण में शामिल किया गया है, जिससे शिक्षक न केवल शिक्षण कौशल में प्रवीण होते हैं, बल्कि वे एक समग्र और मूल्य-उन्मुख दृष्टिकोण के साथ सामाजिक परिवर्तन के वाहक भी बनते हैं। अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देकर ये संस्थान शिक्षकों के समस्या-समाधान कौशल को भी सुदृढ़ करते हैं। इस परिवर्तन का प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और एक समावेशी, नैतिक समाज के निर्माण में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आधुनिक शिक्षक शिक्षा संस्थान परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनकर भारतीय शिक्षा के भविष्य को सशक्त कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षक शिक्षा संस्थान अब केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKC) और मूल्य-आधारित शिक्षा को भी समाहित कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत, शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिकता, करुणा, और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रमुखता दी जा रही है। योग, ध्यान, भारतीय दर्शन, और संवाद परंपरा जैसे तत्व प्रशिक्षण का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, जिससे शिक्षक न केवल शिक्षण कौशल में प्रवीण होते हैं, बल्कि वे एक मूल्य-आधारित और समग्र दृष्टिकोण के साथ सामाजिक परिवर्तन के वाहक भी बनते हैं।

पाठ्यचर्या और शिक्षण पद्धति

भारतीय शिक्षा परंपरा में पाठ्यचर्या का स्वरूप केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के आंतरिक और सामाजिक विकास को भी साधता था। दर्शन और साहित्य ने

चिंतनशीलता तथा सांस्कृतिक चेतना को पोषित किया, जबकि योग और ध्यान ने आत्मनियंत्रण और मानसिक संतुलन को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्वत्ता नहीं, बल्कि जीवन की समग्रता को साधना था। शिक्षण पद्धति में संवाद की परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विचार-विनिमय ने शिक्षा को जीवंत और सहभागी बनाया। कथा-कहानी का प्रयोग नैतिक मूल्यों को सहज रूप से संप्रेषित करने का माध्यम था, जिससे शिक्षा केवल सैद्धांतिक न रहकर अनुभवजन्य बन गई। अनुभवात्मक शिक्षा ने ज्ञान को व्यवहार से जोड़ा, जिससे विद्यार्थी जीवन की वास्तविकताओं के प्रति सजग हुए। वर्तमान समय में भारतीय मूल्य प्रणाली को पाठ्यचर्या और शिक्षण पद्धति में नए रूपों में अपनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, योग और ध्यान को मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में शामिल कर विद्यार्थियों की एकाग्रता और भावनात्मक संतुलन को सुदृढ़ किया जा सकता है। साहित्य और दर्शन को केवल सांस्कृतिक अध्ययन तक सीमित न रखकर नैतिकता, सामाजिक न्याय और वैश्विक नागरिकता के निर्माण में प्रयुक्त किया जा सकता है। संवाद परंपरा को आधुनिक कक्षाओं में इंटरैक्टिव लर्निंग, सेमिनार और वर्कशॉप के रूप में पुनर्जीवित किया जा सकता है। इसी प्रकार कथा-कहानी और अनुभवात्मक शिक्षा को प्रोजेक्ट-आधारित लर्निंग तथा केस स्टडी के रूप में लागू किया जा सकता है। इस प्रकार भारतीय मूल्य प्रणाली का पुनर्संयोजन आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय, नैतिक और उत्तरदायी बना सकता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि जीवन और समाज के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

शिक्षक शिक्षा संस्थानों की भूमिका

भारतीय शिक्षा परंपरा में शिक्षक को सदैव मूल्य-प्रेरक और जीवंत आदर्श के रूप में देखा गया है। शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि अपने आचरण और जीवनशैली से विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है। इस दृष्टि से आधुनिक शिक्षक शिक्षा संस्थानों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह है कि वे ऐसे शिक्षकों का निर्माण करें जो अपने व्यवहार, नैतिकता और दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। शिक्षक का व्यक्तित्व स्वयं शिक्षा का माध्यम बन जाता है, और उसकी जीवनशैली विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय होती है। इन संस्थानों का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है शिक्षा को समाज और संस्कृति से जोड़ना। यदि शिक्षक शिक्षा संस्थान स्थानीय परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक जीवन से जुड़े रहते हैं, तो वे शिक्षा को अधिक जीवंत और प्रासंगिक बना सकते हैं। विद्यार्थियों को केवल कक्षा तक सीमित न रखकर समाज और समुदाय के साथ जोड़ना मूल्य शिक्षा का वास्तविक स्वरूप है। भारतीय परंपरा में शिक्षा सदैव समाजोपयोगी रही है, और यही दृष्टि आज भी आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रशिक्षण केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रहे, बल्कि उसमें नैतिकता, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का भी समावेश हो। शिक्षक को इस प्रकार

तैयार करना आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों के लिए न केवल ज्ञान का स्रोत बने, बल्कि जीवन के आदर्शों का भी संवाहक हो। साथ ही, शिक्षक का योगदान समाज के निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह केवल विद्यार्थियों को शिक्षित नहीं करता, बल्कि समाज में नैतिकता, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी विकसित करता है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों से प्रशिक्षित शिक्षक समुदाय के साथ जुड़कर सामाजिक परिवर्तन के वाहक बनते हैं। वे शिक्षा को सामाजिक न्याय, समानता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बनाते हैं। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह समाज के नैतिक स्तंभ और सांस्कृतिक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित होता है।

चुनौतियाँ और विमर्श

भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों के सामने आज जो चुनौतियाँ हैं, वे केवल शैक्षणिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी हैं। सबसे पहले, आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करना कठिन कार्य है। वैज्ञानिक दृष्टि और तकनीकी प्रगति शिक्षा को तर्कसंगत और प्रयोगपरक बनाती है, जबकि भारतीय परंपरा शिक्षा को आध्यात्मिक मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। इन दोनों ध्रुवों को एक साथ साधना आवश्यक है, ताकि शिक्षा केवल रोजगारोन्मुखी न होकर जीवनोपयोगी भी बने। संस्थागत ढाँचे में परिवर्तन भी एक बड़ी चुनौती है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को मूल्य-आधारित प्रशिक्षण देने के लिए पाठ्यचर्या और पद्धति में सुधार करना पड़ता है, लेकिन प्रशासनिक जटिलताएँ, संसाधनों की कमी और नीतिगत अस्पष्टता इस प्रक्रिया को कठिन बना देती हैं। ढाँचे में बदलाव केवल औपचारिक सुधारों से संभव नहीं है; इसके लिए मानसिकता और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आवश्यक है।वैश्वीकरण ने शिक्षा को नई संभावनाएँ दी हैं, लेकिन इसके साथ मूल्य क्षरण की समस्या भी सामने आई है। प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावाद ने शिक्षा को अधिकाधिक कौशल और तकनीकी दक्षता पर केंद्रित कर दिया है, जिससे नैतिकता, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। शिक्षा पर आधारित सर्वेक्षण और आलोचनात्मक निबंध इस बात की पुष्टि करते हैं कि वैश्वीकरण ने शिक्षा को व्यावसायिक बना दिया है, परंतु मूल्य-आधारित दृष्टि कमजोर हुई है। इन विमर्शों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा प्रणाली को पुनः मानवीय और मूल्य-संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन साधते हुए, संस्थागत ढाँचे को लचीला और समाजोपयोगी बनाना होगा। साथ ही, वैश्वीकरण के दबाव में भी मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देना आवश्यक है। यही दृष्टिकोण शिक्षा को भविष्य के लिए अधिक प्रासंगिक और नैतिक आधार प्रदान कर सकता है।

सिफारिशें

प्रस्तुत सिफारिशों का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय, मूल्य-संवेदनशील और समाजोपयोगी बनाने की दिशा में ठोस मार्गदर्शन प्रदान करना है। यह शिक्षा के सभी स्तरों पर

गुणवत्ता, समावेशन और नैतिकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कदमों को रेखांकित करता है

- **नीति स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश**

  ○ शिक्षा नीतियों में भारतीय दर्शन, सांस्कृतिक मूल्य और परंपरा को गहन रूप से शामिल किया जाए।

  ○ यह सुनिश्चित किया जाए कि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि और भारतीय आध्यात्मिक मूल्य परस्पर पूरक बनें।

  ○ नीति निर्माताओं को शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुखी न रखकर जीवनोपयोगी और मूल्य-आधारित बनाने पर बल देना चाहिए।

- **शिक्षक प्रशिक्षण में योग, ध्यान और साहित्य का अनिवार्य समावेश**

  ○ शिक्षक शिक्षा संस्थानों में योग और ध्यान को प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए, ताकि शिक्षक मानसिक संतुलन और आत्मनियंत्रण विकसित कर सकें।

  ○ भारतीय साहित्य को पाठ्यचर्या में शामिल कर संवेदनशीलता, करुणा और सांस्कृतिक चेतना को पोषित किया जाए।

  ○ शिक्षक स्वयं इन मूल्यों को आत्मसात करेंगे तो वे विद्यार्थियों के लिए जीवंत आदर्श बन सकेंगे।

- **अनुसंधान और प्रकाशन को प्रोत्साहन**

  ○ भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित मूल्य शिक्षा मॉडल विकसित करने के लिए संस्थागत शोध को बढ़ावा दिया जाए।

  ○ शिक्षक शिक्षा संस्थानों को ऐसे प्रकाशनों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो शिक्षा को मानवीय और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बना सकें।

  ○ शोध और प्रकाशन के माध्यम से परंपरा का पुनर्जीवन होगा और शिक्षा को आधुनिक संदर्भों में लागू किया जाए।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा परंपरा का मूल आधार सदैव मूल्य-आधारित रहा है, जहाँ ज्ञान केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं बल्कि जीवनोपयोगी आदर्शों का संवाहक माना गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में सत्य, धर्म, करुणा और आत्मानुशासन जैसे मूल्य शिक्षा के केंद्र में रहे हैं। यही कारण है कि मूल्य-आधारित शिक्षा का भारतीय ज्ञान प्रणाली से गहरा संबंध है। यह संबंध शिक्षा को केवल कौशल और रोजगार तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे मानवीय, नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाता है।इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत केंद्रीय

है। शिक्षक केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं, बल्कि जीवंत आदर्श और मूल्य-प्रेरक होते हैं। शिक्षक शिक्षा संस्थानों का दायित्व है कि वे ऐसे शिक्षकों का निर्माण करें जो अपने आचरण और दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकें। यदि शिक्षक स्वयं मूल्य-संवेदनशील होंगे, तो वे विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक बनकर शिक्षा को जीवनोपयोगी बना देंगे। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा संस्थान शिक्षा प्रणाली के नैतिक और सांस्कृतिक आधार को मजबूत करने वाले स्तंभ हैं। भविष्य की दिशा में भारतीय दृष्टि का वैश्विक शिक्षा में योगदान विशेष महत्त्व रखता है। आज जब शिक्षा विश्व स्तर पर तकनीकी दक्षता और प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित हो रही है, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल्य-आधारित दृष्टिकोण शिक्षा को संतुलित और मानवीय बना सकता है। योग, ध्यान, साहित्य और दर्शन जैसे तत्व वैश्विक शिक्षा को मानसिक स्वास्थ्य, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध कर सकते हैं। भारतीय दृष्टि शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन न रखकर जीवन का मार्गदर्शक बनाने की क्षमता रखती है। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मूल्य-आधारित शिक्षा, शिक्षक शिक्षा संस्थानों की केंद्रीय भूमिका और भारतीय दृष्टि का वैश्विक योगदान मिलकर शिक्षा को अधिक मानवीय, नैतिक और भविष्योपयोगी बना सकते हैं। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है—ज्ञान को जीवन और समाज से जोड़ना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Desai, R. (2025). Integrating Indian knowledge systems in modern education: Towards an inclusive and sustainable curriculum. International Journal of Innovation in Engineering Research & Management, 12(Special Issue 04), 42–42.
- Dubey, Gunjan. (2025). Indian Knowledge System:key principles &Concepts. International Journal of Social Impact, 10(1), 294–301. https://doi.org/10.25215/2455/1001028
- Sharma, S., & Rai, R. (2024). Role of holistic education practices to enrich the Indian knowledge system in contemporary education. International Journal of Advanced Research, 12(5), 659–666. https://doi.org/10.21474/ijar01/18768
- Pearson, E., & Degotardi, S. (2024). 'Innovating' to promote equity and inclusion in early childhood education: A framework for documenting localised pedagogical approaches. Pedagogy Culture and Society, 33(4), 1237–1260. https://doi.org/10.1080/14681366.2024.2344123

- भावनाभावना. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और इसकी उपादेयता: एक अध्ययन. IJCRT, 13(6), a743–a752. https://www.ijcrt.orgood education: A framework for documenting localised pedagogical approaches. Pedagogy Culture and Society, 33(4), 1237–1260. https://doi.org/10.1080/14681366.2024.2344123
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (n.d.). एनसीईआरटी. https://ncert.nic.in
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.). शिक्षा मंत्रालय. https://www.education.gov.in
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.). भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS). https://www.education.gov.in
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.). भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग. https://iksindia.org
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.). इंडियन नॉलेज सिस्टम (IKS) डिवीजन।

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).